स्थापना

सन् 1986

स्थान

संगमनेर

लर्न गीता विस्तार

183 देशों में 14 भाषाओं में लगभग 14 लाख साधकों

गीता महाकुम्भ 2026

20 दिसम्बर 2026 को कोटा

गीता परिवार : चार दशकों की संस्कार-साधना से विश्वचेतना तक

गीता परिवार की यात्रा केवल एक संस्था की यात्रा नहीं, बल्कि संस्कार, साधना और सेवा से गुंथे एक जीवंत परिवार की प्रेरक गाथा है।

९ मिनट   हिन्दी

स्थापना से विस्तार तक

पाण्डव पंचमी—मान्यता है कि इसी दिन पांचों पांडवों ने माता कुंती के साथ व्रत और शिव-पूजन किया था। वनवास, कष्ट, अनिश्चितता—सब कुछ था, पर धर्म नहीं छोड़ा। यह पर्व उसी दृढ़ता की स्मृति है। पांडव पंचमी हमें याद दिलाती है कि जीवन जीतने के लिए ये पाँच शक्तियाँ चाहिए— सत्य, संयम, साहस, सेवा, विवेक —उसी दिन, सन् 1986 में संगमनेर की पुण्यभूमि पर गीता परिवार की स्थापना हुई। पूज्य आचार्य श्री किशोर जी व्यास एवं स्वर्गीय श्री ओंकारनाथ जी मालपाणी द्वारा बोया गया यह बीज, आज पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन में एक विश्वव्यापी वटवृक्ष बन चुका है।

प्रारम्भिक वर्षों में संगमनेर और महाराष्ट्र के कुछ नगरों से आरम्भ हुई बाल संस्कार शिविरों की यह धारा शीघ्र ही सम्पूर्ण भारत में प्रवाहित हो गई। सातारा, सोलापुर, पुणे, मुंबई से लेकर कोलकाता, सूरत, कोटा, लखनऊ और हैदराबाद तक संस्कारों का यह प्रकाश निरंतर फैलता गया।

पद नहीं, परंपरा; प्रतिष्ठा नहीं, परिश्रम

गीता परिवार की पहचान सेवा और समर्पण से बनी है। प्रारम्भिक दो दशकों तक यहाँ कोई पद व्यवस्था नहीं थी—केवल कार्य, त्याग और साधना थी। सम्पर्क प्रमुख के रूप में आदरणीय डॉ. सञ्जय मालपाणी ने अनेक नवाचारी प्रयोगों द्वारा कार्य को नई दिशा दी। यह संस्था जड़ों का सिंचन करती है —जहाँ नाम और प्रतिष्ठा का नहीं, बल्कि सेवा भाव का ही मूल्य है।

गाँवों से महानगरों तक, विद्यालयों से खुले मैदानों तक—योग, सूर्य नमस्कार, प्रज्ञा संवर्धन, गीता प्रशिक्षण, साहस संस्कार और नाट्य संस्कार जैसे विविध उपक्रमों के माध्यम से गीता परिवार ने समाज में संस्कारों का प्रकाश फैलाया।

गीता प्रचार के अभिनव आयाम

– स्वर्णा काकी जी का मधुर स्वर : श्रीमद्भगवद्गीता के बारहवें एवं पन्द्रहवें अध्यायों का ध्वनिमुद्रण कर महाराष्ट्र के विद्यालयों में लगभग चालीस सहस्र बालकों को गीता का संस्कार प्रदान किया गया।

– नाट्य संस्कार प्रकल्प : आदरणीय गिरीश जी डागा, क्षितिज महापात्र एवं सोनाली महापात्र के सहयोग से महानाट्यों की सशक्त परंपरा विकसित हुई। ध्रुव, प्रह्लाद, अभिमन्यु, छत्रपति शिवाजी महाराज और स्वामी विवेकानन्द जैसे आदर्श चरित्रों पर चालीस से अधिक महानाट्यों का मंचन हुआ, जहाँ मंच मनोरंजन नहीं, चरित्र निर्माण का साधन बना।

– लर्न गीता उपक्रम : कोरोना काल में, जब संसार ठहर-सा गया था, तब गीता परिवार ने ऑनलाइन माध्यम से गीता का वैश्विक प्रसार किया। आज यह उपक्रम 183 देशों में 14 भाषाओं में लगभग 14 लाख साधकों को गीता से जोड़ चुका है।

– राष्ट्रीय और वैश्विक विस्तार : भगवान श्रीजगन्नाथ जी की भूमि उड़ीसा में, भुवनेश्वर के पूर्व जिलाधिकारी आदरणीय श्री प्रमोद भैया के प्रयासों से सरकारी सहयोग द्वारा विद्यालयों में गीता पाठ आरम्भ हुआ। गीता परिवार की पुस्तकों का उड़िया भाषा में अनुवाद कर वहाँ एक सशक्त संगठन की स्थापना की गई। इस प्रकार गीता परिवार का रथ भारत की सीमाओं को पार कर विश्व के कोने-कोने तक पहुँचा।

चालीस वर्षों का उत्सव

सन् 2025 की पाण्डव पंचमी पर गीता परिवार ने अपने चालीसवें वर्ष में प्रवेश किया। पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज की पावन उपस्थिति में दीप प्रज्वलन एवं प्रार्थना के साथ उत्सव का शुभारम्भ हुआ। वरिष्ठ उपाध्यक्ष आदरणीय हरिनारायण व्यास जी ने स्थापना कालीन सदस्यों, वरिष्ठ साधकों एवं वर्तमान पदाधिकारियों का अभिनंदन किया। यह अवसर केवल स्मरण का नहीं, बल्कि साधना की आगामी यात्रा के संकल्प का था।

आगामी संकल्प : गीता परिवार की साधना यात्रा का नया अध्याय

गीता परिवार अपने चतुर्दशक पूर्ति महोत्सव के पश्चात् अब एक वर्ष के विराट संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। यह संकल्प केवल कार्यक्रमों की सूची नहीं, बल्कि एक महायज्ञ है—जहाँ प्रत्येक उपक्रम एक आहुति है और प्रत्येक साधक उसकी ज्योति।

- गीता महाकुम्भ **2026** : 20 दिसम्बर 2026 को कोटा में गीता महाकुम्भ का आयोजन होगा, जिसमें चालीस हजार से अधिक बालकों को जोड़ने का लक्ष्य है। ऐसे चार महाकुम्भ देश के विभिन्न स्थलों पर होंगे, जो गीता परिवार की साधना को जन-जन तक पहुँचाएँगे।

- विष्णु कोटि ऐप : महाकुम्भ का शुभारम्भ चार करोड़ विष्णु सहस्रनाम पाठ से होगा। इसके लिए "विष्णु कोटि" नामक विशेष डिजिटल मंच तैयार किया गया है, जिसे हर साधक अपने मोबाइल पर डाउनलोड कर इस महायज्ञ में सहभागी बन सकता है।

- टीम **11** पोर्टल : संगठनात्मक विस्तार हेतु Team 11 पोर्टल विकसित किया गया है। इसके माध्यम से चालीस हजार कार्यकर्ताओं का पंजीकरण कर 4000 केन्द्रों की स्थापना की जाएगी। इन केन्द्रों के द्वारा विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं में नियमित संस्कार कार्यक्रम आयोजित होंगे, जिससे गीता परिवार का प्रकाश गाँव-गाँव और नगर-नगर तक पहुँचेगा।

- शक्ति–भक्ति संस्कार : आगामी वर्ष में विशेष रूप से शक्ति और भक्ति संस्कार पर बल दिया जाएगा। शक्ति : प्रतिदिन बारह सूर्य नमस्कार। भक्ति : श्रीमद्भगवद्गीता का बारहवाँ अध्याय (भक्तियोग)।इस प्रकार बच्चों और युवाओं में शारीरिक ऊर्जा और आध्यात्मिक श्रद्धा का संतुलित विकास होगा।

संस्कार महोत्सवों की श्रेणियाँ

गीता परिवार ने संस्कार आयोजनों को चार स्तरों में विभाजित किया है—

- पाँच हजार बच्चों का आयोजन : संस्कार महोत्सव

- पाँच से दस हजार बच्चों का आयोजन : संस्कार महासंगम

- दस से बीस हजार बच्चों का आयोजन : संस्कार कुम्भ

- बीस से चालीस हजार बच्चों का आयोजन : संस्कार महाकुम्भ

इसी क्रम में पहला संस्कार महाकुम्भ विदर्भ, महाराष्ट्र के नागपुर में आदरणीय गडकरी जी के क्षेत्र में सम्पन्न हुआ।

गीता परिवार की यह यात्रा केवल संगठन की नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा है। यहाँ पद और प्रतिष्ठा से अधिक सेवा, साधना और समर्पण का मूल्य है। चार दशकों की अविराम तपस्या ने गीता परिवार को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया है। आने वाले वर्षों में यह परिवार करोड़ों बालकों और साधकों तक श्रीमद्भगवद्गीता का प्रकाश पहुँचाने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है।

भारत माता को विश्वगुरु बनाने की दिशा में गीता परिवार का यह प्रयास**;** संस्कार**,** साधना और सेवा की एक अमूल्य धरोहर है।

परम्परा, पर्यावरण, सुरक्षा और समरसता : साधना का नया पथ

पाण्डव पञ्चमी के पावन अवसर पर गीता परिवार के संस्थापक एवं मार्गदर्शक, परम पूज्य स्वामी श्री गोविन्द देव गिरि जी महाराज ने चालीस वर्षों की साधना यात्रा के उपलक्ष्य में आगामी शताब्दी की दिशा बताई। उन्होंने कहा कि गीता परिवार की स्थापना करते समय बाल संस्कार कार्य इसका मूल उद्देश्य था और आज भी वही धारणा उनके हृदय में जीवित है। संस्कार प्राप्त करने वाले बालक जब बड़े होकर पालक बनते हैं, तो वही संस्कार उनके जीवन का आधार बन जाते हैं।

भगवद्गीता को आधार बनाकर गीता परिवार ने छोटे-से प्रयास से शुरुआत की थी—बालकों के कण्ठ में गीता के श्लोक विराजमान कराना। आज वही कार्य विश्वव्यापी हो गया है। 183 देशों में गीता की वाणी गुञ्जायमान है और 14 लाख से अधिक साधक आत्मबोध पाकर भगवद्भक्ति के मार्ग पर अग्रसर हैं।

साधना के चार सूत्र

स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि ईश्वर भक्ति, भगवद्गीता, भारत माता, विज्ञान दृष्टि और स्वामी विवेकानन्द—ये पाँच सूत्र हमारे मार्गदर्शक हैं। परन्तु इस वर्ष के लिए उन्होंने चार विशेष सूत्र बताए, जो गीता परिवार की साधना यात्रा का नया पथ बनेंगे।

1. परम्परा बोध

बालकों को केवल गीता और योग सिखाना पर्याप्त नहीं है; उन्हें अपने देश की परम्परा और इतिहास का बोध कराना आवश्यक है। शिवाजी महाराज की वीरता और जीजा माता की प्रेरणा इसी परम्परा बोध से उत्पन्न हुई थी। कर्मयोग तभी जागृत होगा जब बालक अपने महापुरुषों की गाथाएँ सुनेंगे और उनसे प्रेरणा लेंगे।

2. पर्यावरण की रक्षा

आज जल, भूमि, वायु और आकाश प्रदूषण से त्रस्त हैं। गीता परिवार का प्रत्येक साधक पर्यावरण संरक्षण को अपनी सेवा का अंग बनाए। वृक्षारोपण, प्लास्टिक का न्यूनतम प्रयोग और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा—ये सब हमारी साधना का हिस्सा हों। विभूतियोग में भगवान ने हिमालय, गंगा और वृक्षों को अपनी विभूति कहा है। सृष्टि की रक्षा करना ही परमात्मा की आराधना है।

3. सुरक्षा की सिद्धता

भगवान श्रीकृष्ण ने सदैव सज्जनों की रक्षा की। उसी भाव से हमें भी समाज की सुरक्षा का संकल्प लेना है। शौर्य संस्कार का विस्तार कर शारीरिक बल और संगठनात्मक शक्ति को बढ़ाना होगा। संख्या बल पर ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि यदि समाज सुरक्षित नहीं रहा तो गीता परिवार भी सुरक्षित नहीं रहेगा। अर्जुन हमारे आदर्श हैं—हमें भी अर्जुन के समान साहसी और सजग बनना होगा।

4. समरसता का भाव

गीता परिवार का उद्देश्य केवल उन परिवारों तक पहुँचना नहीं है जहाँ गीता पहले से पढ़ी जाती है, बल्कि उन घरों तक भी पहुँचना है जहाँ गीता का नाम तक नहीं सुना गया। गोवर्धन लीला की भाँति गीता का महाप्रसाद हर घर तक पहुँचना चाहिए। गीता की पुस्तक, चित्रमय गीता और भगवान के चित्र वंचित परिवारों तक पहुँचाना ही सच्ची समरसता है। जब हम उनके सुख-दुःख में सहभागी बनेंगे, तभी गीता परिवार वास्तव में भगवान श्रीकृष्ण का परिवार कहलाएगा।

परम्परा का बोध, पर्यावरण की रक्षा, सुरक्षा की सिद्धता और समरसता का भाव—ये चार सूत्र गीता परिवार की साधना यात्रा के नए पथ हैं। जब हम इन सूत्रों के साथ आगे बढ़ेंगे, तो समाज हमें हृदय के द्वार खोलकर अपनाएगा और गीता परिवार जन-जन का परिवार बन जाएगा। चालीस वर्षों की साधना से शताब्दी की ओर बढ़ते हुए गीता परिवार का यह संकल्प केवल संगठन का नहीं, बल्कि राष्ट्र और विश्व की चेतना को संस्कारित करने का है।